

महान वैज्ञानिकों पर यह पुस्तक श्रृंखला खासकर बच्चों के लिए तैयार की गई है। इन्हें पढ़कर बच्चों को लगेगा कि विज्ञान अद्भुत है और इसी के कारण संसार हमारे रहने के लिए बेहतर बन गया है।

इन पुस्तकों में वैज्ञानिकों के बचपन की घटनाओं को सम्मिलित किया गया है। बच्चे यह जान सकेंगे कि ये महान वैज्ञानिक अपने बचपन में उनके जैसे ही थे और अगर मेहनत, लगन तथा आत्मविश्वास से काम करें तो वे भी एक दिन इन वैज्ञानिकों की तरह ही अपनी मंज़िल पा सकते हैं।

नन्हीं मारी अपने पिता की प्रयोगशाला में परख नलियों से खेलती थी जिन्होंने उसे आविष्कार करने की प्रेरणा दी। क्या था वह आविष्कार?

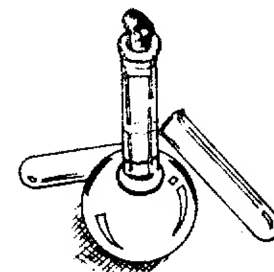
इस पुस्तक की लेखिका मैरी जोसफ़ ने दिल्ली और बम्बई के विश्वविद्यालयों में अंग्रेज़ी पढ़ाई है, और अपने प्रिय पाठकों, बच्चों के लिये कई पुस्तकें लिखीं हैं। इसका अनुवाद हिन्दी के लेखक श्री महावीर सिहल ने किया है।

महान वैज्ञानिक

मारी क्यूरी

मैरी जोसफ़





दूर देश पोलैण्ड में

बहुत पहले के वॉरसॉ नगर में सर्दी की एक शाम थी। मार्या अपने भाईयों और बहिनों के साथ आग के सामने बैठी थी, और उसके पिता उन्हें एक कहानी सुना रहे थे।

"मेरी भी इच्छा है कि मैं पढ़ सकूं," मार्या ने अपने आप सोचा। "इस तरह मैं बहुत कुछ सीखूंगी और सीखना बहुत अच्छी बात है।"

मार्या ने दूसरे बहुत तरीकों से सीखा था। वह जो भी देखती और सुनती थी उन सभी पर बहुत ध्यान देती थी, और स्वयं से बहुत सवाल पूछती थी। उसके माता-पिता शिक्षक थे। उसके पिता विज्ञान के प्रोफेसर थे और उसकी माता लड़कियों के लिये एक निजी विद्यालय चलाती थी। शायद इसी कारण सीखने की इच्छा उसमें थी।



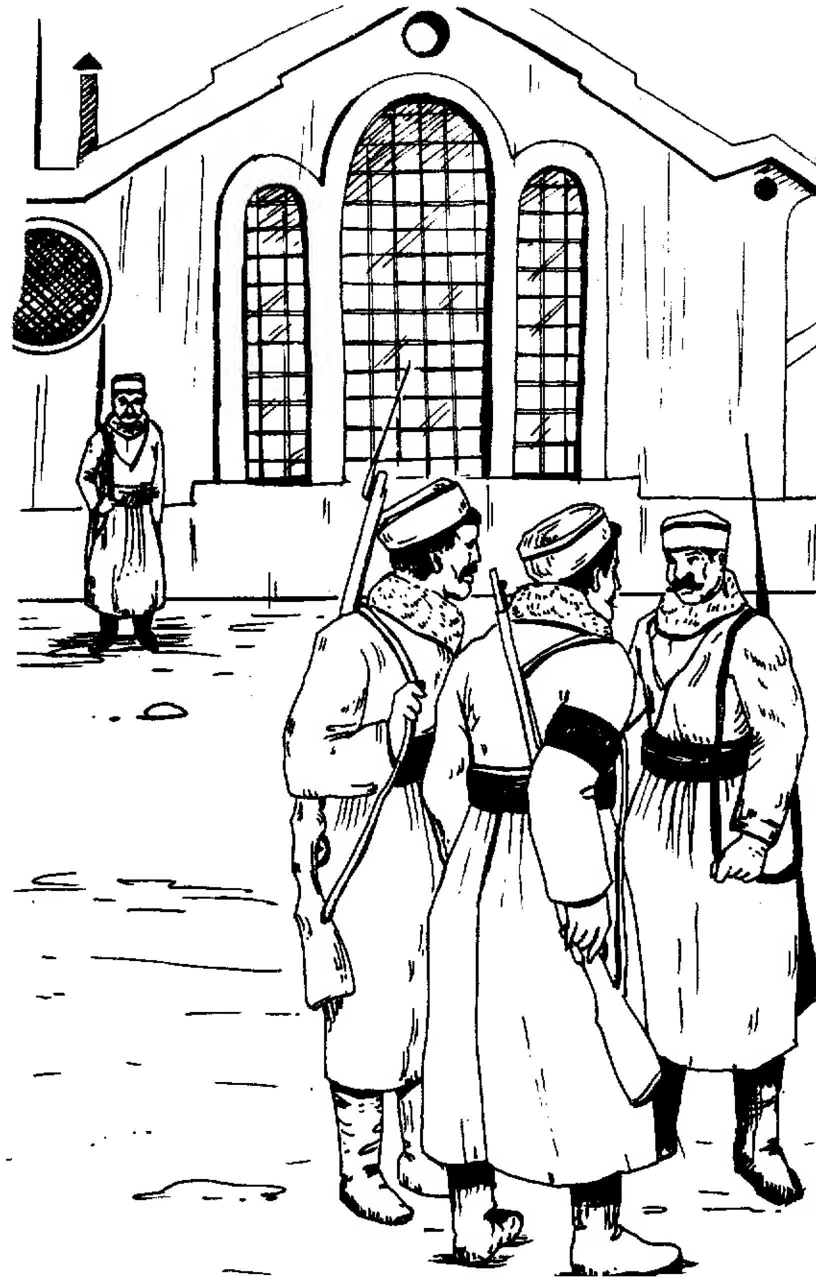
उन दिनों पोलैण्ड रूस देश के अधीन था। मार्या के पिता एक देशभक्त थे। इसलिए उनको यह अच्छा नहीं लगता था। वह अपनी इस भावना को छिपाने की कोशिश करते थे। लेकिन रूसी सिपाहियों को इसका पता लग गया और उनको सजा दी गई। सिपाहियों ने उनका पैसा कम कर दिया और उनका दर्जा भी नीचा कर दिया। परन्तु मार्या के पिता ने कभी हार नहीं मानी।

मार्या ने भी कभी हार नहीं मानी। सीखने की उसकी इच्छा तब और भी गहरी हुई जब उसे पता लगा कि रूसी लोग नहीं चाहते कि पोलैण्ड के लोग अपना इतिहास जानें।

एक दिन जब वह स्कूल की खिड़की से बाहर देख रही थी तब उसने एक सिपाही को स्कूल की तरफ आते हुए देखा।

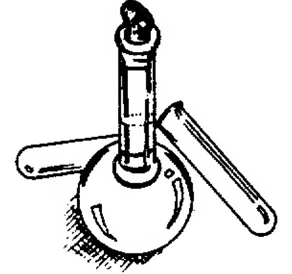
"वह यहां आ रहा है, जल्दी करो। अपनी इतिहास की किताबें छिपा दो," वह डर के मारे बहुत ज़ोर से चिल्लाई।

लड़कियां किताबों को जल्दी- जल्दी छिपाने लगीं तो पावों के टकराने और लड़खड़ाने की आवाज होने लगी। सिपाही जल्दी ही दरवाजे पर आ गया। उसने



अध्यापक से कहा कि वह एक विद्यार्थी को रूस के शासक ज़ारों के नाम दोहराने को कहे । मार्या ने सब नाम बता दिये, क्योंकि वह बहुत होशियार थी और उसकी याददाश्त अच्छी थी । सिपाही को तसल्ली हो गई और वह जल्दी ही वापस लौट गया ।





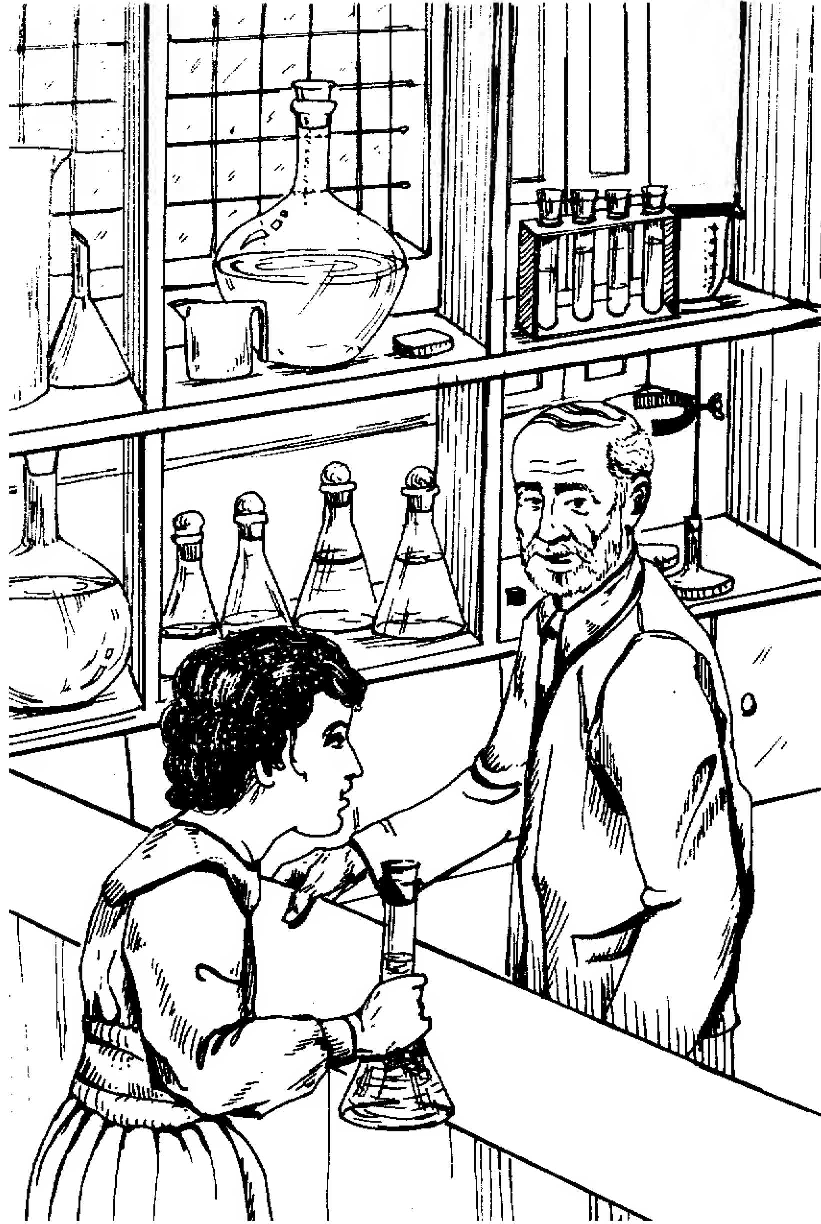
मैं एक दिन वैज्ञानिक बनना चाहती हूं

मार्या को अपने पिता की प्रयोगशाला बहुत अच्छी लगती थी । प्रयोगशाला वह स्थान होता है जहां वैज्ञानिक अपना शोधकार्य करते हैं । मार्या स्वभाव से दूसरों के बारे में जानने की इच्छा रखती थी । उसने जब लम्बी गर्दन वाली बोतलों और लम्बे, गोल चौड़े मुंह वाले जार को देखा तो अपने पिता से पूछा, "यह बोतलें किस काम आती हैं ?"

"ये वैज्ञानिकों द्वारा अपने काम में इस्तेमाल की जाती हैं", उसके पिता ने कहा ।

"वैज्ञानिक क्या काम करते हैं ?"

"वे नए-नए आविष्कार और शोध करते हैं । वस्तुओं के बारे में कुछ नया ढूंढ़ने को शोध कहते हैं," उसके पिता ने उत्तर दिया ।



"मुझे यह अच्छा लगता है। मैं एक दिन वैज्ञानिक बनना चाहती हूं।" मार्या ने कहा।

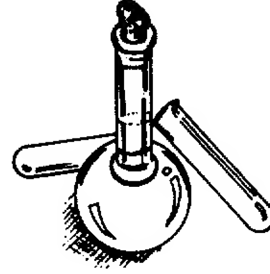
"मेरी प्यारी मार्या, तुम्हारी बहिन ब्रोनिया ने यह सवाल मुझसे पूछा था। उसकी भी इच्छा है कि वह आयुर्विज्ञान विद्यालय में पढ़े। मैं तुम दोनों की इच्छाओं को पूरा करना चाहता हूं, परन्तु मेरी नौकरी मुझे यह इजाज़त नहीं देती। मेरे पास पैसा नहीं है," उसके पिता दुःखी होते हुए बोले। वे अपने बच्चों की इच्छाएं पूरी करने में सक्षम नहीं थे। बेचारी मार्या। सोचो तुम कितने भाग्यशाली हो। तुम्हें स्कूल जाने के लिए ललचाने की या काम करने की ज़रूरत नहीं है। वह तो तुम्हारा हक़ है।

अपने पिता की दुखी आवाज़ सुनकर और खुद को निराश महसूस करके भी मार्या ने हार न मानने का संकल्प कर लिया। अगर यह बात है तो ब्रोनिया पहले जाएगी। मार्या ने कहा, "मैं बच्चों को पढ़ाकर ब्रोनिया को पैसा भेजूंगी। जब ब्रोनिया चिकित्सक की हैसियत से पैसा कमाना शुरू कर देगी तो वह मुझे विश्वविद्यालय में दाखिला दिलाने के लिए सहायता कर सकती है।"

और इस तरह मार्या ने काम करना शुरू कर दिया। शुरू में तो उसने एक परिवार में काम किया, जहां मालकिन

मार्या के साथ बहुत बुरा व्यवहार करती थी । वह ज़्यादा घण्टे काम के बदले में बहुत कम पैसा देती थी । परन्तु एक बार फिर मार्या ने हार नहीं मानी । उसे मालूम था कि दुनिया में बहुत तरह के लोग रहते हैं । उनके साथ निभाना होगा या अपनी कोशिश से उन्हें बदल देना होगा । बाद में उसे एक अच्छे परिवार में काम मिल गया । यह परिवार मार्या के साथ दोस्ताना बर्ताव करता था और मार्या को ज़्यादा पैसा भी मिलता था ।





सोरबोन्न में पढ़ाई

मार्या के लिए दिन बहुत धीरे-धीरे व्यतीत होने लगे। परन्तु 1891 में एक दिन उसे पेरिस से एक पत्र मिला जिसे पढ़कर वह अपनी खुशी छिपा नहीं सकी।

"आह ! ब्रोनिया ने मुझे पेरिस में मिलने के लिये कहा है। मैं वैज्ञानिक बनने के लिए पढ़ूंगी," उसने अपने माता-पिता से प्रसन्न हो कर कहा। उसके माता-पिता इस बात से बहुत प्रसन्न हुए। वे मार्या के लिए गर्व महसूस कर रहे थे।

मार्या अपनी अटेची तैयार करते हुए सोच रही थी कि मुझे कठिन काम करना पड़ेगा। क्योंकि मैं विज्ञान



सीखना चाहती हूं इसलिए मुझे कठिन काम में भी आनन्द आएगा। और अगर मैं वैज्ञानिक बनकर नई खोज कर सकी तो मैं लोगों की मदद कर सकूंगी।

इसीलिए जब तुम बड़े हो जाते हो तो यह जरूरी हो जाता है कि जिस विषय में तुम्हारी रूचि है उसी को चुनो। इस तरह से तुम्हें काम में आनन्द आयेगा।

सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए अटेची अपने हाथ में लिए मार्या बहुत दुखी थी। वह अपने परिवार से प्यार करती थी और उनसे अलग होना कठिन था। जब रेलगाड़ी स्टेशन से चलने लगी तब मार्या ने अपना हाथ हिला-हिलाकर अपने माता-पिता से विदाई ली और जब तक वे आंखों से ओझल नहीं हो गए, वह उनको देखती रही। मार्या को मालूम था कि अब से उसकी ज़िन्दगी अपने माता-पिता से दूर कटेगी।

जब रेलगाड़ी पेरिस में पहुंची, मार्या दु:खी नहीं थी। वह अपनी नई ज़िन्दगी के बारे में सोचकर बहुत उत्तेजित थी। वह अपनी बहिन से मिली। उसकी बहन अपने पति के साथ स्टेशन पर मार्या को लेने आई थी। अपनी लम्बी

और थकाने वाली यात्रा के बाद भी वह घर जाने के बजाय सोरबोन्न जाना चाहती थी।

सोरबोन्न दुनिया के बेहतरीन विश्वविद्यालयों में से एक है। इससे अलग बात तो यह थी कि उन दिनों ऐसे विश्वविद्यालय अधिक नहीं थे जो कि महिलाओं को विज्ञान के विषय में दाखिला देते। जैसे ही मार्या सोरबोन्न की बड़ी इमारत को देखने लगी उसका दिल खुशी से भर उठा। वह उस सारे वातावरण का भाग बनना चाहती थी। और इसलिये उसने अपना नाम मार्या से बदल कर 'मारी' करने का फैसला किया जो कि एक फ्रांसिसी नाम है।

मारी ज़्यादा दिन तक अपनी बहिन के साथ नहीं रुकी। अब उसकी बहिन के एक छोटा बच्चा था और उनके मित्र भी बहुत थे। मारी को अपनी पढ़ाई में ध्यान देने के लिए शान्ति चाहिये थी। और इसीलिये उसने एक ऊपर का कमरा किराये पर लेने का फैसला कर लिया। यह कमरा ठंडा था और रोशनी और हवा एक रोशनदान से होकर आती थी जो कि उस घर की छत पर था।

आराम न होने के कारण भी मारी ने अपना काम जारी



रखा। वह रात देर तक पढ़ती रहती। यहां तक कि मध्यरात्रि के बाद तक। जब तक वह थक नहीं जाती और कुर्सी पर ही नहीं सो जाती। उसके पास ज़्यादा पैसे न होने के कारण वह कभी-कभी कुछ न खाती और कई बार यह भूलने की कोशिश करती कि वह भूखी है। लेकिन फिर भी वह मेहनत से पढ़ती। उसकी आंखों के नीचे गहरे निशान बनने लगे थे क्योंकि वह ज़रूरत के मुताबिक सोती नहीं थी। एक दिन वह गिर पड़ी। उसकी दोस्त ने उसे ज़मीन पर बेहोश पड़ा पाया। जब मारी होश में आयी तो उसकी दोस्त ने उससे पूछा, "तुम्हें खाना खाए कितने दिन हो गए? तुम बेवकूफ़ लड़की हो। तुम यह भी नहीं समझती कि अगर तुम अपने स्वास्थ्य का ख्याल नहीं रखोगी तो शोध नहीं कर पाओगी। केवल एक स्वस्थ शरीर तुम्हारे दिमाग से काम करवा सकता है।"

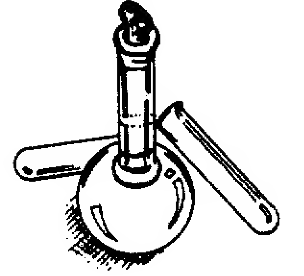
"हां, मैंने सबक सीख लिया है। मैं सोचती हूं कि मैं अपनी बहिन के घर वापस चली जाऊं।"

उसकी बहिन ने उसका स्वागत दिल खोलकर किया। स्वादिष्ट भोजन करते हुए मारी ने कहा, "वाह!



कितना अच्छा है। मुझे ऐसा खाना खाए हुए बहुत दिन हो गए हैं।"





पत्नी और मां

विश्वविद्यालय में मारी का काम जारी रहा। उसे किताबों, प्रयोगशाला और परखनलियों से प्यार था। वह बहुत कुछ सीखना चाहती थी। जब उसने वैज्ञानिक की उपाधि प्राप्त करने के लिए परीक्षा दी तो वह आसानी से उत्तीर्ण हो गई। वास्तव में वह विश्वविद्यालय में प्रथम आई थी।

'आह ! मैं कितनी खुश हूं। सारा कठिन परिश्रम काम तो आया', उसने सोचा। और उसे पता था कि उसे सारी ज़िन्दगी कठिन काम करना पड़ेगा — क्योंकि चाहे कितना भी पता क्यों न हो फिर भी नई बातें सीखने को होंगी।

ज्ञान कभी खत्म होने वाला नहीं है। यह उसकी इच्छा पर था कि या तो वह मेहनत करके कुछ खोज करे या घर

बैठ कर आराम करे। उसने कठिन काम करने की ठानी। क्योंकि इसी के द्वारा जो कुछ भी वह जानती थी उसे दुनिया को दे सकती थी, और बहुत सारे लोग इससे फ़ायदा उठा सकते थे।

एक दिन ऐसा हुआ कि उसको अपने एक दोस्त के घर रात्रिभोज पर आमंत्रित किया गया। वह भी वैज्ञानिक था। उसका नाम कोवाल्स्की था। वहां पर वह कोवाल्स्की के एक दोस्त से मिली जिसका नाम था पियर क्यूरी। वह एक होशियार चिकित्सक था। पियर अपने काम में इतना व्यस्त था कि उसके पास विवाहित जीवन के लिए बिल्कुल समय नहीं था, और न ही इसमें उसकी रूचि ही थी। उन दिनों बहुत-सी महिलाएं ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं होती थीं। और पियर को लगता था कि अगर वह शादी करेगा तो उसका वक्त ऐसी महिला के साथ गुज़रेगा जो कि उसके काम में हिस्सा नहीं ले सकेगी। परन्तु मारी से मिलने पर उसने सोचा, "यह वास्तव में एक दिलचस्प महिला है। यह देखने में अच्छी है और इसके दिमाग भी है। इससे भौतिकी और गणित के सवालों के बारे में बात करना रोचक रहेगा।"

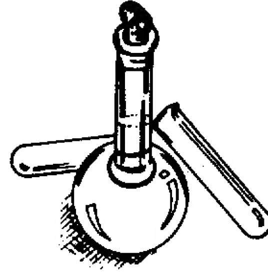
इसके बाद मारी और पियर कई बार मिले और अन्त



में उन्होंने शादी करने का फैसला कर लिया। उनका सारा समय शोध में बीतने लगा। वे दोनों एक-दूसरे के साथ रह कर बहुत खुश थे। उनकी खुशी और भी बढ़ गयी जब उनके एक सुन्दर बेटी पैदा हुई। अपनी बेटी का नाम उन्होंने रीनी रखा। बाद में रीनी ने अपने काम के लिए बहुत से इनाम भी जीते, क्योंकि उसमें अपने माता-पिता के गुण विद्यमान थे।

मारी को मां बनना अच्छा लगा था। उसे वैज्ञानिक बनना भी अच्छा लगा था। वह एक अच्छी मां और अच्छी वैज्ञानिक दोनों एक साथ बनने के लिए खूब मेहनत करती थी। उसकी बेटी और विज्ञान दोनों ने उसको खूब खुशी दी क्योंकि कठिन काम भी आनन्ददायक हो सकता है।





एक्स-रे

इसी समय एक वैज्ञानिक रोएंटजन ने एक्स-रे की खोज की । उन दिनों फ़ोटोग्राफ के लिए इस्तेमाल की जाने वाली काच की प्लेटें काले कागज में लपेट दी जाती थी जिससे की सूर्य की किरणों का उन पर असर न पड़े । अगर सूर्य की किरणें इन प्लेटों पर गिर जाएं तो सफ़ेद धब्बे उभर आते और वे खराब हो जाती थीं । रोएंट्जन को यह जानकारी हुई कि कुछ लिपटी हुई प्लेटों पर धब्बे उभर आए हैं । पहले तो वह परेशानी में पड़ गया । मगर फिर उसने प्लेटों के पास कुछ पत्थर देखे । इन पत्थरों से किरणें निकल रही थीं । ये धब्बे इन किरणों के कारण थे । उसने इन किरणों को 'एक्स-रे' का नाम दे दिया ।

रोएंट्जन की इस 'एक्स-रे' की खोज के बाद दूसरे



वैज्ञानिक हेनरी बैक्यूरेल ने खोजा कि जिन खनिज पदार्थों में यूरेनियम था उसमें से उसी तरह की किरणें निकलती थीं। उनका नाम 'गामा-रेज़' रखा गया।

इन सब के बाद मारी ने अपने आप से बहुत वैज्ञानिक सवाल पूछे। क्या यूरेनियम में रोशनी को अपने में समाहित करने और फिर बाहर निकालने की शक्ति है? यूरेनियम के अन्दर से किरणें बाहर निकलने का क्या कारण है?

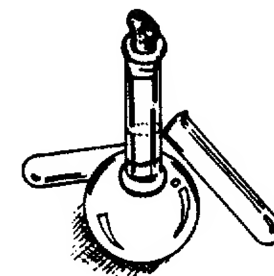
मारी ने निश्चय किया कि वह पियर की मदद से इसके बारे में और खोज करेगी।

पियर ने विद्युत मापने के कुछ उपकरण खोजे थे। मेरी ने इनको अपनी खोज में इस्तेमाल किया। उसने पाया कि जो किरणें यूरेनियम द्वारा प्राप्त होती हैं वे यूरेनियम से ही आती हैं। यूरेनियम को इन किरणों के प्रसार के लिए बाहर की किसी किरण को अपने में समाहित नहीं करना पड़ता। उसने इसको रेडियोएक्टीविटी (Radioactivity) कहा। अब वह यह जानना चाहती थी कि क्या ऐसे दूसरे पदार्थ भी हैं जिनमें यही खूबी विद्यमान है।

यह मारी और पियर के लिये काफी मेहनत का काम था। उन्होंने सभी कच्चे खनिजों का निरीक्षण किया। इस



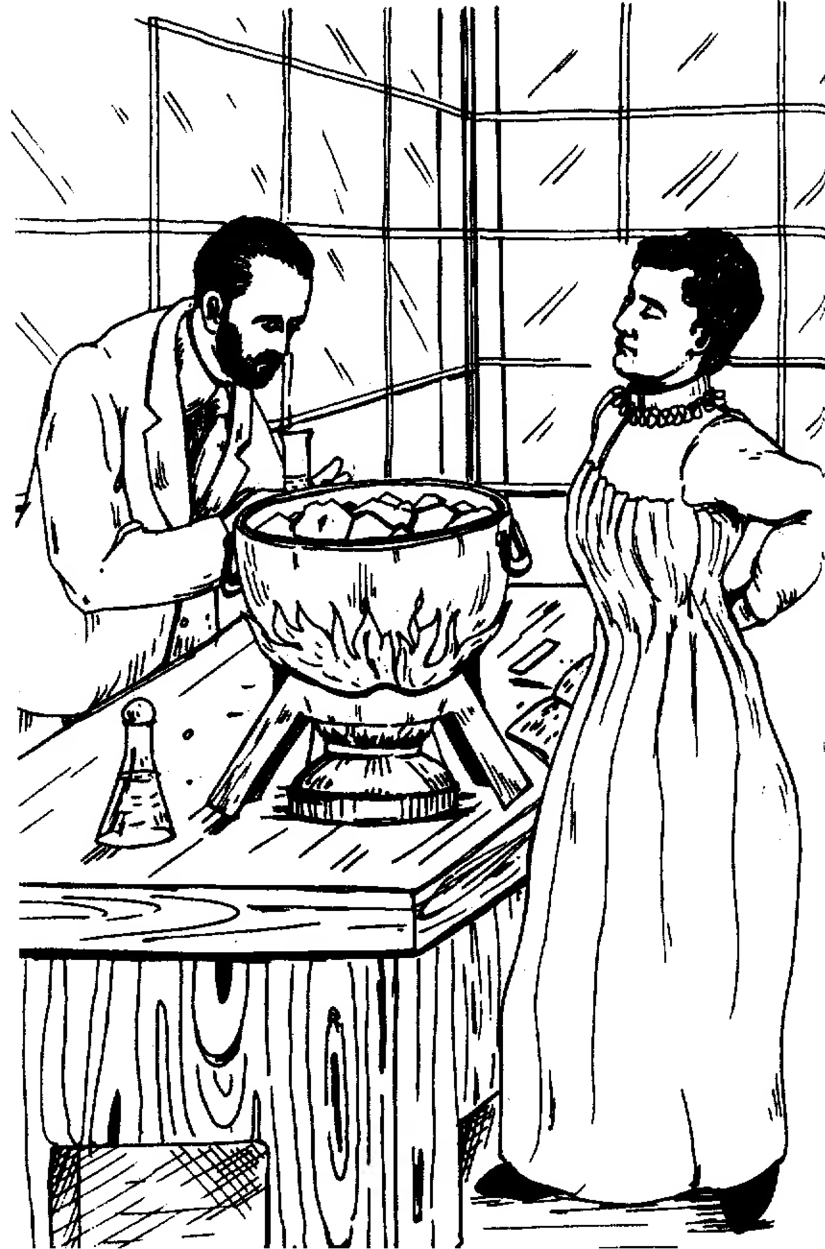
काम में उन्हें बहुत मेहनत तथा समय लगा और उनको बिल्कुल भी आराम नहीं मिलता था। उन्हें यह जानकर निराशा हुई कि जितने भी अन्य कच्चे खनिज पदार्थों का उन्होंने निरीक्षण किया था उनमें से किसी में भी रेडियोएक्टीविटी नहीं थी।



नोबल पुरस्कार — एक सम्मान

एक दिन भाग्य ने उनका साथ दिया। यह दिन उनके लिए बहुत खुशी का दिन था। उन्होंने एक चट्टान पिचब्लैण्ड (Pitchblend) खोजी। यह चट्टान काली और सख़्त थी। यह यूरेनियम से ज़्यादा प्रभावशाली थी। मारी को इस खोज से बहुत प्रसन्नता हुई। क्या उसने एक नया पदार्थ ढूंढ़ा था?

अपनी खोज के बारे में निश्चित होने के लिए उसको कई प्रयोग करने पड़े। उसको यह पदार्थ उसके स्वच्छ रूप में ढूंढ़ना था। इस नये पदार्थ के बारे में सोचने के अलावा उन्हें बहुत-सा शारीरिक श्रम भी करना पड़ा। उन्होंने प्रयोगशाला में टनों वज़न में पिचब्लैण्ड मंगाया। उनके पास उबालने के बहुत बड़े बर्तन थे। जब उनको



भारी कच्चा खनिज पदार्थ इन बर्तनों में उबालने और साफ करने के लिये ले जाना पड़ता था तो उनकी पीठ में दर्द हो जाया करता था। हर बार वे जब इसका बहुत बड़ा टुकड़ा उबालते तो वह इतना पिघल जाता कि केवल थोड़ा-सा ही नीचे बर्तन में बचता।

"पियर, मेरी पीठ में बहुत दर्द है और इन दुर्गंधवाली गैसों से मेरी आंखों में तकलीफ़ होती है," थकी हुई मारी ने कहा। लेकिन कुछ दिन बाद ही प्रकृति ने अपना राज़ खोल दिया।

"उस रोशनी की तरफ देखो, पियर।" मारी खुशी से चिल्लाई। दोनों आश्चर्यचकित बर्तन में से आ रही चमकती हुई नई रोशनी की ओर देखने लगे। उन्होंने दो नये पदार्थों की खोज की थी। इनमें से मारी ने एक का नाम अपने प्यारे देश पोलैण्ड के नाम पर 'पोलोनियम' (Polonium) रखा और दूसरे का रेडियम (Radium) जो कि यूरेनियम से लाखों गुना अधिक शक्तिशाली था। उनके इस कार्य के लिये वे पुरस्कार के हक़दार थे।

जब हम मेहनत से काम करते हैं तो अन्त में पुरस्कार पाते ही हैं। और अगर हमारा काम बहुत अच्छा होता है तो हम और भी अधिक अच्छा पुरस्कार पाते हैं। और मारी

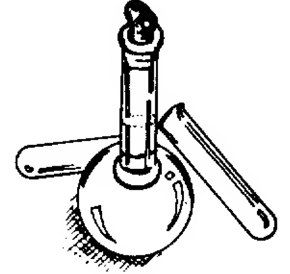


तथा उसका पति को 1903 में भौतिकी का नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया। नोबल पुरस्कार स्वीडन देश के एक अभियन्ता ने शुरू किया था। उनका नाम आल्फ्रेड नोबल था। उन्होंने डायनामाईट के प्रयोग की खोज की थी। मृत्यु होने पर वह बहुत सारा धन छोड़ गया था। इस धन के कारण ही भौतिकी, रसयान, चिकित्सा, साहित्य और शान्ति के क्षेत्रों में प्रति वर्ष पुरस्कार दिए जाते हैं। आल्फ्रैड नोबल चाहते थे कि ज़्यादा लोग ज्ञान के प्रसार में रुचि लें और उसे आगे बढ़ाएं।

"क्या हमारे लिए यह गर्व की बात नहीं है कि हमें यह महान गौरव प्राप्त हुआ है?" मारी ने पियर से कहा। "लेकिन इससे भी अच्छा काम होगा यह पता लगाना कि रेडियम का किन विभिन्न तरीकों से उपयोग किया जा सकता है।"

इन किरणों की मदद से वैज्ञानिक अब यह जांच सकते थे कि हीरे असली हैं या नकली। इन किरणों की सहायता से वे मनुष्यों और वस्तुओं के शरीर के अन्दर देख सकते हैं। कल्पना करो कि तुम्हारे शरीर के अन्दर कुछ ऐसा हो जिसकी वजह से दर्द हो लेकिन जिसे तुम देख नहीं सकते क्योंकि शरीर के अन्दर हम देख ही नहीं

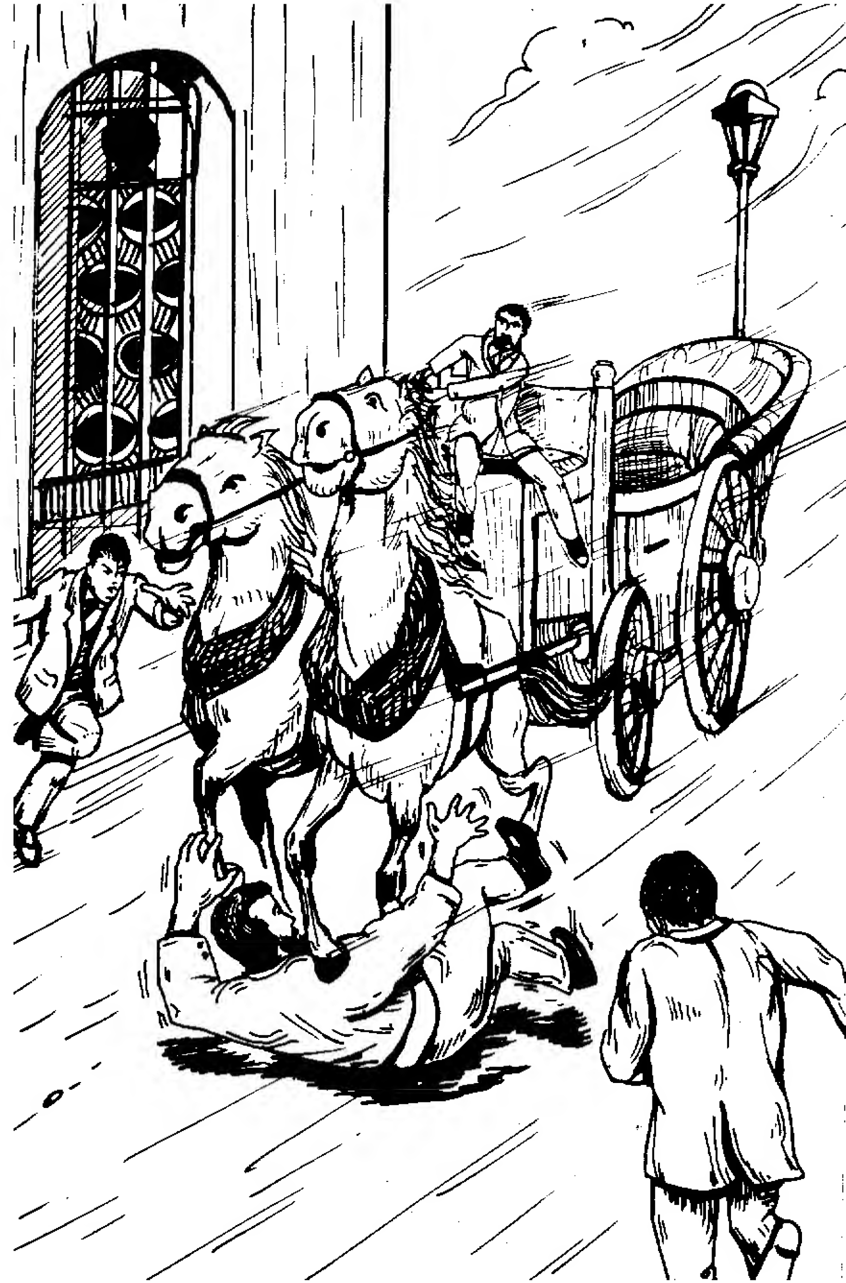
सकते हैं। रेडियम हमें शरीर के अन्दर देखने में सहायता करता है। सबसे महत्व की बात यह है कि रेडियम खास तरह के कैन्सर का जो एव भयंकर बीमारी है, सफलतापूर्वक इलाज भी करता है। बहुत से लोग इस बीमारी से मर जाते हैं। लेकिन क्यूरी और पियर की इस नई खोज के बाद कैन्सर से पीड़ित मनुष्यों की मृत्यु कम होने लगी।



विज्ञान की एक महान महिला

मारी की इस खोज ने बहुत से लोगों को मृत्यु से बचाया। वह और पियर बहुत उदार थे। आमतौर पर अपने ज्ञान के बदले में बहुत से लोग ढेर सारा धन पाने के इच्छुक होते हैं, क्योंकि यह ज्ञान जो केवल उनके पास है, बहुत उपयोगी होता है। पर मारी और उसके पति ने अपनी खोज को मानवता को समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा, "रेडियम मानव कल्याण का एक पदार्थ है और वह सम्पूर्ण विश्व का है। किसी एक व्यक्ति या देश का उस पर हक नहीं है।"

लेकिन 19 अप्रैल 1906 को मारी की खुशी दु:ख में बदल गई। उस दिन जब पियर घर लौट रहा था, तब वह एक गाड़ी के नीचे कुचल कर उसी वक्त मर गया। यह मारी के लिए बहुत बड़ी क्षति थी। वह और पियर एक



दूसरे के अभिन्न अंग थे। मारी को लगा कि उसके अन्दर कुछ मर गया है। परन्तु उसे अपनी जिन्दगी जारी रखनी थी और अपनी दोनों बेटियों का ध्यान रखना था। अब तक उसके पास रीनी के अलावा एक और बेटी थी।

सन् 1911 में उसने रसायन के कार्य में खोज करने के लिये दूसरी बार नोबल पुरस्कार प्राप्त किया। इस बार उसे रेडियम के अणु-भार को मापने के लिये पुरस्कार दिया गया था। फ्रांस की सरकार मेरी के नाम से इतना प्रभावित हुई कि उसने एक शोध संस्थान उसके नाम पर स्थापित किया। इसका नाम क्यूरी इंस्टिट्यूट ऑफ रेडियम (Curie Institute of Radium) रखा गया। इस शोध संस्था का अध्यक्ष मारी को बनाया गया।

मारी का स्वर्गवास 4 जुलाई 1934 को हुआ। वह एक बीमारी से ग्रस्त थी जो उसके रक्त कोशिकाओं (Cells) को प्रभावित करती थी। उस समय इस बीमारी का कोई इलाज नहीं था। लगातार रेडियम के साथ काम करने के कारण वह इस बीमारी से ग्रसित हो गई थी। यह कितने दु:ख की बात है कि संसार की इस महान वैज्ञानिक को उसी कैंसर रोग से मरना पड़ा जिसके इलाज की खोज उसने स्वयं रेडियम का पता लगाकर कुछ हद तक की

थी।

मारी की मृत्यु पर उसके मित्र और महान वैज्ञानिक एल्बर्ट आइंस्टाइन ने उसके कार्य की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने कहा, 'मारी के पास विकसित दिमाग, इच्छाशक्ति और निर्णय लेने की क्षमता थी।' जब मारी एक छोटी लड़की थी तो बहुत से लोगों का विचार था कि लड़कियां वैज्ञानिक नहीं बन सकतीं। पर मारी ने इसे गलत साबित कर दिया। अपने कठिन परिश्रम और त्याग के द्वारा उसने एक साथ एक पत्नी, मां और वैज्ञानिक की भूमिका निभाई। इतनी सारी खूबियां एक इंसान में शायद ही पाई जाती हैं। वह एक वैज्ञानिक ही नहीं अपितु दुनिया के महान वैज्ञानिकों में से एक थी। और उसे इसके बारे में बिल्कुल भी घमंड नहीं था। लेकिन हम सब को इस महान महिला पर गर्व रहेगा, जिसने उदारता पूर्वक संसार को बहुत कुछ दिया है।